International Journal in Management and Social Science
Volume 10 Issue 10, October 2022 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

बौद्ध भिक्षुणी संघ का प्रारम्भ एवं विकास : एक अध्ययन

डॉ0 प्रदीप सिंह
विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, टी0डी0पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

महात्मा बुद्ध द्वारा दीक्षित नारियों में सर्वप्रथम महाप्रजापति गौतमी एवं यशोधरा थी किन्तु हार्नर मीना तालीम आदि ने यह सम्भावना प्रकट की है कि महाप्रजापति गौतमी के पूर्व यशोधरा (राहुल माता, जो बुद्ध की पत्नी थी।) भिक्षुणी बनी।[1] किन्तु यह सम्भावना उचित नहीं जान पड़ती। मनोरथ पूरणि (अंगुत्तरनिकाय की टीका) के अनुसार राहुल की माता ने महाप्रजापति गौतमी के निश्रय में प्रव्रज्या ग्रहण की थी।[2] इसके अतिरिक्त तिष्या, पूर्णा, धीरा, मित्रा, मद्राशीला, सुमेधा, सुजाता, अभया, सुमंगल माता, नन्दा, मित्रकाली, चाला, उपचाला, आम्बपालि का विशेष स्थान है। बौद्ध ग्रन्थ थेरीगाथा के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कालान्तर में अनेक रानियों, राजकुमारियों एक अन्य प्रभावशाली नारियों ने 'धर्म संघ' में दीक्षा ली। मगधराज बिम्बसार की रूपगर्विता रानी खेमावती को भी महात्मा बुद्ध ने स्वयं राजगृह जाकर दीक्षित किया था। राजगृह का समस्त नारी समाज बौद्ध मतावलम्बी हो गया।[3] इसके बाद महात्मा बुद्ध ने एक धनाड्य सेठ की पत्नी किसी को संघ में सम्मिलित किया और उसके बाद उत्पलवर्णी को। जिन नारियों ने कठोर तपस्या द्वारा तन, मन, धन से बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया उनमें विशार एवं आम्बपाली का नाम विशेषोल्लेखनीय है। बौद्ध भिक्षुणी संघ के विकास का इतिहास भी बौद्ध धर्म के विकास के साथ अभिन्न रूप में जुड़ा हुआ है। अनुकूल परिस्थितियों के कारण बौद्ध धर्म का जैसे–जैसे विस्तार बढ़ता गया, बौद्ध भिक्षुणी संघ का प्रचार भी फैलता गया। यद्यपि बौद्ध धर्म में भिक्षुणी संघ की स्थापना भिक्षु संघ की स्थापना के बाद और वह भी सन्देहशील वातावरण में हुई थी, परन्तु कुछ समय के अनन्तर ही यह बौद्ध संघ का एक आवश्यक अंग हो गया और बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में इसने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[4] द्वितीय बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म एक एकीकृत धर्म के रूप में नहीं रह गया था, अपितु कई निकाय में विभाजित हो गया था बौद्ध भिक्षुणी संघ का विकास भी उन्हीं बौद्ध निकायों का इतिहास है, जिसकी वे सदस्या थी। यद्यपि किसी भिक्षुणी को किसी विशेष निकाय के संघ में प्रविष्ट होने या उसका सदस्य बनने का उल्लेख नहीं मिलता। भिक्षु के सन्दर्भ में ही उसके किसी विशिष्ट निकाय के सदस्य होने का उल्लेख प्राप्त होता है। ऐसे स्थानों से प्राप्त भिक्षुणियों से सम्बन्धित अभिलेखों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे उस स्थान पर विकसित निकाय की सदस्याएं थी।[5] थेरीगाथा की अट्ठकथा के माध्यम से बौद्ध भिक्षुणी संघ के प्रकार को देखा जा सकता है। अभिलेखों में भिक्षुणियों द्वारा दिये गये दानों का उल्लेख प्राप्त होता है। अतः जिन स्थानों पर भिक्षुणियों के द्वारा दिये दानों का उल्लेख है वहां–वहां भिक्षुणियां या उनका कोई छोटा या बड़ा संघ अवश्य रहा होगा। सारनाथ, कौशाम्बी, कोशल, वैशाली, मगध, चम्पा, राजगृह, कपिलवस्तु, मथुरा, बोधगया आदि

में भिक्षुणी संघ एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में विद्यमान था। सांची[6], सारनाथ[7], कौशाम्बी[8] एवं भाब्रू[9] में प्राप्त अशोक के अभिलेखों में उत्कीर्ण 'भिक्षुणी' तथा 'भिक्षुणी संघ' शब्द यह स्पष्ट घोषित करता है कि तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व के समय तक ये स्थल भिक्षुणी केन्द्र के रूप में स्थापित हो चुके थे। सांची, सारनाथ एवं कौशाम्बी के अभिलेखों के बौद्ध संघ में भेद पैदा करने वाले भिक्षु–भिक्षुणियों को चेतावनी दी गई है। भाब्रू अभिलेख में भिक्षु–भिक्षुणियों को कुछ पुस्तकें पढ़ने एवं उन पर मनन करने की सलाह दी गई है। सारनाथ परवर्ती काल में भी एक प्रसिद्ध भिक्षुणी केन्द्र के रूप में बना रहा, सारनाथ सामन्तीय निकाय का प्रसिद्ध केन्द्र था। प्रथम शताब्दी ईसा के एक (रा0स081) लेख[10] में भिक्षुणी बुद्धमित्रा की 'त्रैपिटिका' कहा गया है। जो अपने आचार्य बल के समान तीनों पिटकों में पारंगत थी। सम्भवतः यह भिक्षुणियों की शिक्षा का महान केन्द्र था। श्रावस्ती भी बौद्ध भिक्षुणियों का एक अन्य महत्वपूर्ण स्थल था। बुद्धकालीन कोशल नरेश प्रसेनजित के साथ ही भिक्षुणी क्षेमा का प्रसिद्ध दार्शनिक वार्तालाप हुआ।[11] भिक्षुणी क्षेमा ने नरेश के गम्भीर दार्शनिक प्रश्नों का विद्वतापूर्ण उत्तर दिया था। श्रावस्ती में ही भिक्षुणियों का प्रसिद्ध राजका राम विहार था सम्भवतः प्रसेनजित ने गौतमी महाप्रजापति के लिए एक बिहार बनवाया था, जिसके भग्नखण्डहरों को फाहियान तथा ह्वेनसांग दोनों ने देखा था।[12] बौद्ध धार्मिक स्थलों को कपिलवस्तु का विशिष्ट स्थान है। बौद्ध धर्म में भिक्षुणी संघ की स्थापना का सर्वप्रथम प्रयास गौतमी महाप्रजापति ने यही से किया था, परन्तु बुद्ध ने उसकी प्रथम प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया दिया था। जिस न्याशीघ्र वृक्ष के नीचे महात्मा बुद्ध के समक्ष संघाती लिए हुए गौतमी उपस्थित हुई थी– उसी स्थल पर इस घटना की स्मृति के लिए एक स्तम्भ बना हुआ था जिसे चतुर्थ शताब्दी ई0 में फाहियान[13] ने देखा था। बौद्ध भिक्षुणियों के लिए वैशाली भी एक महत्वपूर्ण स्थल था। वैशाली में ही स्थविर आनन्द के प्रयास से महात्मा बुद्ध ने भिक्षुणी संघ की स्थापना की और अनुमति प्रदान की थी। बौद्ध भिक्षुणी आम्रपालि ने बुद्ध को यही दान दिया था। वही पर निर्मित एक स्तम्भ का उल्लेख फाहियान[14] एंव ह्वेनसांग[15] दोनों ने किया है। देवरिया से प्राप्त एक बौद्ध अभिलेख[16] में एक बौद्ध भिक्षुणी को 'शिशिनी' कहा गया है। यहां आनन्द की स्मृति में एक स्तम्भ बना हुआ था जहां भिक्षुणियां उन्हें सम्मान प्रदर्शित करती थी। क्योंकि वह आनन्द ही थे जिनके प्रयास से भिक्षुणियां बौद्ध संघ में दीक्षित हुई।[17] पश्चिमी भारत में भी बौद्ध भिक्षुणियों का प्रसार प्रथम शताब्दी तक पूर्ण हो चुका था। कन्हेरी, कार्ले भाजा, कुदा, नासिक, जुन्नार आदि से प्राप्त अभिलेखों से यह प्रतीत होता है कि स्थल भिक्षुणियों के प्रसिद्ध केन्द्र के रूप में कई सदियों तक विद्यमान थे। कन्हेरी से प्राप्त एक अभिलेख[18] में एक भिक्षुणी को 'थेरी' कहा गया है। यह विशेषण अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी अन्य अभिलेख में हम भिक्षुणी के लिए 'थेरी' शब्द नहीं पाते। जुन्नार भी भिक्षुणियों का प्रमुख स्थल था। यहां धर्मोत्तरीय शाखा (थेरवादी निकाय) के भिक्षुणि बिहार बनवाये जाने का उल्लेख है।[19] सम्भवतः श्रावस्ती के राजकाराम बिहार के सदृश यहां भी भिक्षुणियां स्थायी रूप से निवास करती थी। बौद्ध भिक्षुणियों का दक्षिण भारत में सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थल अमरावती था इसका विकास लगभग द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से प्रारम्भ होकर कई शताब्दियों तक चलता रहा। अमरावती में भिक्षुणियों द्वारा दिये गये दानों की एक लम्बी सूची मिलती है। यहां से भिक्षुणियों से सम्बन्धित अनेक तथ्य प्राप्त

हुए है। यहां एक 'भिक्षुणी', 'बोधि' को मदन्ती[20] कहा गया है। जो कन्हेरी के थेरी शब्द के समान है इस शब्द का प्रयोग अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। यह क्षेत्र शिक्षा का भी प्रमुख केन्द्र था। विनयधर आर्य पुर्नवसु की शिष्य समुद्रिका का उल्लेख है। जिसे उपाध्यायिनी[21] कहा गया है। स्पष्ट है कि भिक्षुणियां विद्या के क्षेत्र में अग्रणी थी और सम्भवतः अध्यापन भी कर सकती थी यहां यह उल्लेखनीय है सम्पूर्ण उत्तरी भारत के किसी अभिलेख में किसी भिक्षुणी को उपाध्यायिनी नहीं कहा गया है। जबकि कुछ भिक्षुणियों को त्रोपेटिका[22] और सूतातिकनी[23] कहा गया है। अमरावती से ही एक अभिलेख में एक भिक्षुणी बुद्धरक्षिता को 'नवकम्यक'[24] कहा गया है। जो बिहारों आदि के निर्माण का कार्य करती थी अथवा उनके निर्माण में सहयोग प्रदान करती थी, सम्भवतः अमरावती में बौद्ध भिक्षुणियां अधिक लोकप्रिय थी। दान देने के सन्दर्भ में आश्चर्य रूप में भिक्षुणियों की संख्या भिक्षुओं से कही ज्यादा थी। यहां एक भिक्षु–भिक्षुणी के साथ–साथ दान देने का उल्लेख प्राप्त होता है जो संघ में प्रवेश लेने से पूर्व भाई–बहन थे।[25] नागार्जुनी कोण्डा से प्राप्त किसी अभिलेख में भिक्षुणियों का उल्लेख नहीं प्राप्त होता अपितु रानियों एवं अन्य उपासिकाओं द्वारा दिये गए दानों का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि द्वितीय प्रथम शताब्दी ईसापूर्व तक सम्पूर्ण भारत में बौद्ध धर्म एवं उसके साथ ही भिक्षुणी संघ का प्रसार हो चुका था अभिलेखों एवं ग्रन्थों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर तृतीय शताब्दी ईसा तक का काल बौद्ध भिक्षुणी संघ का स्वर्ण काल था। बौद्ध भिक्षुणी संघ अपनी स्थापना के प्रारम्भिक दिनों में तथा बाद के कुछ समय तक अपने सैद्धान्ति तथा नैतिक नियमो की श्रेष्ठता के कारण महती विकास को प्राप्त हुआ इसका विस्तार भारत के चारों दिशाओं, पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण में हुआ।

सन्दर्भ

1. मीना तालीम : विमेन इन अली बुद्धिज्म, पृ0–15
2. पालि प्रापर मेक्स द्वितीय भाग, पृ0–743
3. चिरंजीवी लाल पराशर : नारी और समाज, पृ0–146
4. पाण्डेय जी0सी0 : बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास।
5. सिंह, अरूण प्रताप : जैन और बौद्ध भिक्षुणी संघ, पृ0–206
6. ई0 हुल्श : कार्पस इन्सक्रिप्शन्स इण्डिकेरन प्रथम भाग, पृ0–160
7. वही, पृ0–161
8. वही, पृ0–159
9. वही, पृ0–172
10. एच0 लूडर्स : लिस्ट आव ब्राह्मी इस क्रिप्शन्स, पृ0–925
11. संयुक्त निकाय : 42/1
12. बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑफ दि वेस्टर्न, प्रथम भाग, पृ0–25, तृतीय भाग, पृ0–260
13. बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑफ दि वर्ल्ड प्रथम भाग पृ0–29
14. वही, पृ0–32
15. वही, पृ0–309
16. लिस्ट ऑफ ब्राह्मी इन्सक्रिप्शन, पृ0–910

17. बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑफ दि विस्टर्न वर्ल्ड, प्रथम भाग, पृ0—22
18. लिस्ट ऑफ ब्राह्मी इन्सक्रिप्शन, पृ0—1006
19. वही, पृ0—1171
20. वही, पृ0—1240
21. वही, पृ0—1286
22. वही, पृ0—319
23. वही, पृ0—32
24. वही, पृ0—1250
25. वही, पृ0—1223